International Journal of Home Science 2021; 7(1): 04-06

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 7(1): 04-06
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 25-10-2020
Accepted: 05-12-2020

प्रेरणा तिवारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

तृप्ति सिंह
एच. ओ. डी, आर. बी. एस कॉलेज आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रेरणा तिवारी
शोध छात्रा गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

निम्न आय वर्गीय परिवारों का बजट एवं बचत पर पड़ने वाला प्रभाव

प्रेरणा तिवारी, नीलमा कुँवर एवं तृप्ति सिंह

सारांश
परिवार के संदर्भ में भी आय तथा व्यय का समान रूप से महत्व है। आय के रूप में धन अर्जित करने का मुख्य उद्देश्य भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय का अधिकार प्राप्त करना ही है। पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस धन को व्यय किया जाता है, उसे ही पारिवारिक व्यय कहा जाता है। आय के ही समान व्यय का भी निश्चित लेखा–जोखा रखने के लिए इसे एक निश्चित अवधि के संदर्भ में आँका जाता है। सामान्य रूप से परिवार के लिए मासिक अथवा वार्षिक अवधि में होने वाले व्यय को ही पारिवारिक व्यय के रूप में स्वीकार किया जाता है। व्यय वास्तव में आवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन है। आवश्यकतायें असंख्य हो सकती हैं। किन्तु सभी आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव नहीं है क्योंकि प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कम या अधिक मात्रा में धन की आवश्यकता होती है, परन्तु धन एक सीमित साधन है। धन की उपलब्धता आय पर निर्भर करती है। अतः व्यय का निर्धारण आय के संदर्भ में ही होता है।

मुख्य शब्द – आय, बजट, बचत।

प्रस्तावनाः–
परिवार की प्रत्यक्ष आय वह होती है जो प्रत्यक्षतः धन के रूप में उपलब्ध होती हैं। इसके अन्तर्गत प्रमुखतः गृह–स्वामी द्वारा अर्जित धन राशि आती हे। चाहे वह वेतन के रूप में हो अथवा व्यापार या व्यवसाय के माध्यम से कमाई गई धनराशि। यदि गृहणी तथा घर के अन्य सदस्य भी नौकरी करके अथवा कोई दूसरा उद्योग–धंधा करके धन अर्जित करते हैं तो उसे भी प्रत्यक्ष आय में सम्मिलित किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ व्यक्तियों के पास मकान, दुकान, जमीन आदि के रूप में अचल सम्पत्ति होती है। इसको वह किराए पर उठाकर धन प्राप्त कर सकता है। बैंक में जो धराशि जमा होती है, उससे ब्याज प्राप्त होता है। इस प्रकार उक्त सभी साधनों से प्राप्त धन प्रत्यक्ष आय के अन्तर्गत ही सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यय किए गए रूपये या धन से अधिकतम तुष्टि प्राप्त करना चाहता है। अधिकतम तुष्टि प्राप्त करने के लिए उसे अपना पारिवारिक बजट बनाना चाहिए। पारिवारिक बजट में किसी कुटुम्ब की आय और व्यय का विस्तृत ब्योरा दिया जाता है और उसका सम्बन्ध किसी विशेष अवधि – एक माह या एक वर्ष से होता है।

उद्देश्य
1. निम्न आय वर्गीय परिवार का आय के मदों पर व्यय का प्रतिशत ज्ञात करना।
2. बजट पर पति–पत्नी की शिक्षा का प्रभाव ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति
शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले का चुनाव किया गया है जिसमें 6 वार्ड लिए गए हैं जिसमें से प्रति वार्ड 50 परिवार (25 शिक्षित एवं 25 अशिक्षित) का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 300 परिवारों का चयन किया गया है। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली को तैयार किया गया है। इसमें चर और अचर आश्रितों का उपभोग किया गया है। सांख्यकीय उपकरण प्रतिशत, मध्य आदि का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1 आय का स्वरूप

क्र0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	दैनिक	13	26	17	34	16	64	21	84	9	36	20	80	18	36	28	56
2.	मासिक	22	44	13	26	6	24	3	12	11	44	3	12	18	36	3	6
3.	साप्ताहिक	15	30	20	40	3	12	1	4	5	20	2	8	14	28	19	38
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	50	100	50	100

साप्ताहिक आय प्राप्त करने वालों का शिक्षित लोगों का प्रतिशत 20 तथा अशिक्षित लोगों का प्रतिशत 8 पाया गया। पारिवारिक जीवन चक्र की संकुचित अवस्था में 36 प्रतिशत शिक्षित तथा 56 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को दैनिक आय प्राप्त होती है। 36 प्रतिशत शिक्षित तथा 6 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को मासिक आय प्राप्त होती है। 28 प्रतिशत शिक्षित तथा 38 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को साप्ताहिक आय प्राप्त होती है। यह पाया गया कि सर्वाधिक निम्न आय वर्गीय दैनिक मजदूरी पर हैं इसलिए उन्हें गरीबी रेखा के नीचे रखा जाता है।

सारिणी–2 बच्चों की अधिक संख्या पारिवारिक आय में सहायक

क्र0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	हाँ	0	0	0	0	0	0	0	0	5	20	11	44	0	0	0	0
2.	नहीं	50	100	50	100	25	100	25	100	20	80	14	56	50	100	50	100
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100

इन कार्यों से अर्जित धन या बचाए गए धन से परिवार के सदस्यों की अतिरिक्त आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। यदि धन की व्यवस्था ध्यानपूर्वक की जाय तो हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और कुछ धन की बचत भी कर सकते हैं। धन के रूप में जो कुछ भी अर्जित किया जाता है और परिवार में आता है तो उसे आय कहते हैं। यह आय विभिन्न श्रोतों से प्राप्त हो सकती है। नौकरी से प्राप्त होने वाला वेतन,मकान या दुकान से किराया, अंशकालीन कक्षाऐं चलाना, बैंक से प्राप्त होने वाला ब्याज, शेयरों की बिक्री तथा अन्य निवेशों से प्राप्त होने वाला धन आय हो सकती है। आय अपने कौशलों का प्रयोग करके या अपने धरेलू उत्पादों से लाभ अर्जित करके भी प्राप्त की जा सकती है। अपने कौशलों का प्रयोग करते हैं जैसे परिवार के सदस्यों के लिए कपड़े सिलना या परिवार के खाने के लिए सब्जियों को उगाना या परिवार के सदस्यों के लिए स्वैटर बुनना आदि तो इन कार्यों के लिए आपको धन की प्राप्ति नहीं होती है। किन्तु ऐसा करने से आप अप्रत्यक्ष रूप से वह पैसा बचना लेते हैं जिसका भुगतान आपको कपड़े सिलाने, सब्जियों खरीदने या स्वैटर खरीदने के लिए करना पड़ता। इस प्रकार की बचत आपकी आय में वृद्धि करती है। निःशुल्क सेवाओं जसे चिकित्सा सुविधा, बचों के लिए निःशुल्क शिक्षा तथा किराया–मुक्त आवास का प्रयोग करके भी आय में बचत की जा सकती है।

सारिणी–3 भविष्य के लिए बचत

क्र0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	हाँ	35	70	2	4	6	24	2	8	5	20	4	16	35	70	24	48
2.	नहीं	15	30	48	96	19	76	23	92	20	80	21	84	15	30	26	52
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100

बढ़ती मँहगाई के कारण दैनिक जरूरतों को पूरा करना दिनोदिन मुश्किल होता जा रहा है। इसलिए अपने अनिश्चित भविष्य के लिए कुछ जोड़ना भी कठिन होता जा रहा है। लेकिन ऐसे में बचत की आवश्यकता और बढ़ जाती है। बचत किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक है और जो समझदार तथा जिम्मेदार व्यक्ति होते हैं, वह इसके महत्व को कभी नहीं नकारते। शिक्षा, शादी, बीमारी या आपात परिस्थितियाँ, सेवानिवृत्ति, अपना घर आदि ऐसे सैकड़ों कारण हो सकते हैं, जिसके लिए आपको बचत करना पड़ता है। इन सबसे ऊपर एक बात यह है कि अगर आपके पास कुछ पैसे हैं तो आप हर स्थिति में आर्थिक रूप से निश्चित और आत्मनिर्भर रह सकते हैं, जिससे आपमें धैर्य तथा आत्मविश्वास बना रहता है और आप किसी भी जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

पारिवारिक बजट किसी परिवार की आर्थिक दशा का दर्पण होता है। इसलिए गृह स्वामियों के अतिरिक्त अर्थशास्त्रियों व राजनीतिज्ञों तथा समाज–सुधारकों और सरकार के लिए भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सुझाव

बुद्धिमानी से बचत करने के निर्णय से हाथों हाथ बचत होती है। बचट के द्वारा आप हर महीने जितनी पूँजी जमा करते हैं उसे एक सेविंग अकांउट या अन्य विश्वसनीय ब्याज देने वाले इनवेस्टमेंट में लगायें। जितनी ज्यादा रकम आप हर महीने बचायेंगें, आपकी वित्तीय स्थिति भी उतनी ही अधिक बेहतर होगी। यहाँ आपके लिए कुछ पैसे बचाने के उपाय दिए गए हैं।

- एक आपात कालीन फण्ड जमा करें।
- एक रोथ आईआरए अकाउंट खोलें।
- अपने क्रेडिट कार्डस व्यवस्थित करें।
- एक सप्ताह के लिए भोजन की योजना बनायें।

संदर्भ

1. किम, जिंहे; माइकल, एस गटर और टेलर स्पैंगलर्क (2017) ''पारिवारिक वित्तीय निर्णय लेने की समीक्षा : भविष्य के अनुसंधान के लिए सुझाव और वित्तीय शिक्षा के लिए निहितार्थ'', वित्तीय परामर्श और योजना के जर्नल, वॉल्यूम 28, नंबर 2, 253–267, वित्तीय परामर्श और योजना शिक्षा के लिए एसोसिएशन। http://dx.doi.org/10.1891/ 1052-3073.28.2.253
2. फोंसेका, आर0, मुलेन, के0जे0, जमारों, जी0 और जिसिमोपोलोस, जे0 (2012). ''वित्तीय साक्षरता में लिंग अंतर क्या है? घरेलू निर्णय लेने की भूमिका।'' उपभोक्ता मामलों के जर्नल, 46(1)90–106। hattp://dx.doi.org/10.2139/ssrm.1633689.s